International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

स्त्री पुरूष शक्ति संतुलन का प्रतीक छिंदवाड़ा का प्राचीन अर्द्धनारीश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर

प्रो. बिंदिया महोबिया

सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, इतिहास राजमाता सिंधिया शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, छिंदवाड़ा (म.प्र.)

सारांश

धार्मिक पर्यटन हमारे देश की अत्यंत प्राचीन और समृद्ध परम्परा रही है। विभिन्न धर्मों से संबंधित तीर्थ स्थल हमारे पूर्वजों की उत्तम चेतना, परिश्रम एवं दूरदर्शिता के अमूल्य धरोहर हैं। देश के सभी भागों में शिव भक्ति एवं शिव मंदिर स्थापना की परंपरा के कारण यह मंदिर धार्मिक पर्यटन का हिस्सा बने हुए हैं। ज्योति (प्रकाश) और लिंग (शिव का प्रतीक) के संयोजन अर्थात् दिव्य प्रकाश स्वरूप स्वयं भगवान शिव के प्रकाट्य के कारण भारत में स्थित 12 ज्योतिर्लिंग श्रृद्धालुओं के लिए आस्था, भक्ति एवं आध्यात्मिक शक्ति के केंद्र के रूप में स्थापित हैं। इसी तरह एक प्रमुख धार्मिक स्थल अर्द्धनारीश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा जिले में स्थित है। यह मंदिर भगवान शिव और माता पार्वती के संयुक्त रूप अर्द्धनारीश्वर को समर्पित है। इसे ''साढ़े बारहवां ज्योतिर्लिंग'' भी कहा जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में अर्द्धनारीश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर के ऐतिहासिक, धार्मिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक एवं पर्यटन संबंधी बिंदुओं को रेखांकित किया गया है।

शब्द कुंजी – धार्मिक पर्यटन, ज्योतिर्लिंग, अर्द्धनारीश्वर, वास्तुकला, संरक्षण।

अध्ययन विधि –

प्रस्तुत शोध पत्र में पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक तथ्यों के वर्णन के लिए विभिन्न संदर्भ ग्रंथों एवं द्वितीयक स्रोतों को आधार बनाया गया है। जबकि स्थल विशेष का अध्ययन भ्रमण एवं अवलोकन पर आधारित है।

शोध का उद्देश्य –

1. धार्मिक पर्यटन में ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक संभावनाओं को खोजना।
2. छिंदवाड़ा के शिव मंदिर के ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक अध्ययन एवं शोध की संभावनाओं को सामने लाना।
3. स्थानीय धरोहरों के संरक्षण की दिशा में प्रयास।

प्रस्तावना

नर्मदा एवं ताप्ती नदियों के मध्य अवस्थित त्रिभुजाकार रूप में विस्तारित पर्वत श्रृंखला सतपुड़ा के नाम से जानी जाती है। सतपुड़ा श्रृंखला के मध्य भाग में नर्मदा कछार से लगा हुआ छिंदवाड़ा जिला स्थित है। यह जिला अपनी प्राकृतिक सुंदरता, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परम्पराओं के लिए प्रसिद्ध है। जिले के अनेक स्थल ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन्हीं में से शिव भक्ति और उपासना को समर्पित एक प्राचीन स्थल अर्द्धनारीश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर जिले में स्थित है।

अर्द्धनारीश्वर की अवधारणा भारतीय दर्शन और धर्म परम्परा में अत्यंत गूढ़ व विशिष्ट मानी जाती है। जिसमें भगवान शिव के आधे शरीर को पुरूष शक्ति और पार्वती का आधा शरीर स्त्री शक्ति के प्रतीक रूप में माना जाता है। वास्तव में यह संपूर्ण सृष्टि के संचालन के लिए पुरूष और स्त्री दोनों शक्तियों के संतुलन की ओर संकेत करता है। इस रूप में अर्द्धनारीश्वर मंदिर का धार्मिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक महत्व है। यही कारण है कि भारत के बारह ज्योतिर्लिंगों में मध्यप्रदेश में स्थिति महाकालेश्वर और ओमकारेश्वर के पश्चात् तीसरे स्थान पर अर्द्धनारीश्वर ज्योतिर्लिंग का नाम आता है।

भौगोलिक स्थिति

यह मंदिर नागपुर छिंदवाड़ा राष्ट्रीय राजमार्ग पर सौंसर नगर से पश्चिम दिशा की ओर 6 किलोमीटर दूरी पर मोहगांव हवेली ग्राम के समीप स्थित है। यह क्षेत्र मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र दो राज्यों की सीमा पर स्थित होने के कारण दोनों राज्यों के धर्मावलंबियों की आस्था का केंद्र है। मंदिर के समीप ही क्षेत्रीय नदी सर्पा नदी का प्रवाह है। सुंदर, शांत एवं हरियाली युक्त ग्रामीण परिवेश इस स्थल की आध्यात्मिकता को विशेष स्वरूप प्रदान करते हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

यह तीर्थ स्थल सनातन पुरातन काल से सर्पा अथवा सर्पिनी नदी जो सतपुड़ा पर्वतमाला की प्रथम सीढ़ी पर स्थित औदुंबर वृक्ष की जड़ से उद्गमित होकर ऊँ आकार में सर्पाकृति में प्रवाहमान हो रही, के तट पर स्थित मोहगांव जिसका प्राचीन नाम महदगांव था, में स्थित है। पौराणिक आधार पर यह क्षेत्र दण्डकारण्य कहलाता है, यह दैत्यगुरू शुक्राचार्य की कर्मभूमि मानी जाती है। दैत्यगुरू शुक्राचार्य भगवान शिव के अनन्य भक्त थे, उन्होंने सर्पिनी नदी के तट पर अपने आराध्य की तपस्या की, शुक्राचार्य की तपस्या से भोलेनाथ प्रसन्न हुए। तब शुक्राचार्य ने भगवान शिव से कहा कि मैं केवल माता जी के साथ आपके दर्शन चाहता हूँ, तब भगवान शिव ने उन्हें अर्द्धनारीश्वर रूप दिखाया। उस दिन से यहां भगवान शिव अर्द्धनारीश्वर ज्योतिर्लिंग के रूप में विद्यमान हैं। इसके बाद अनन्य भक्तों ने यहां तप किया। जिसमें आन्याजी महाराज, मुकुंद महाराज एवं अन्य तीन महात्माओं की जीवंत समाधियां यहां स्थापित हैं। इतिहासकारों के अनुसार हिंदू सम्राट विक्रमादित्य यहां पूजन करने आते थे। 1300 ई. में हेमाद्रीपंत महाराज द्वारा मंदिर का निर्माण किया गया। 1500 ई. तक रघुजी राजा ने मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया। जब यह

क्षेत्र नागपुर के भोंसले राज्य में स्थानांतरित हुआ तब भोंसल महाराज ने छिंदवाड़ा के गोंड वंशीय राजा दलपत शाह को यहां का शिवलिंग का प्रतिनिधि नियुक्त किया।

स्थापत्य एवं वास्तुकला

मंदिर की वास्तुकला एवं अवस्थिति अत्यंत विशिष्ट है। मंदिर का निर्माण, संरचना एवं वास्तुकला महामृत्युंजय मंत्र पर आधारित होने से यह शक्ति पीठ कहलाता है। केदारनाथ ज्योतिर्लिंग से रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग तक सीधी रेखा के ठीक मध्य में यह मंदिर स्थापित है। मंदिर गर्भगृह, मंडप और प्रवेश द्वारों से युक्त है। गर्भ गृह के चारों और प्रवेश द्वार हैं, जिनमें तीन–तीन दरवाजे हैं, इनके नाम चारों धाम द्वारका, रामेश्वरम, जगन्नाथपुरी और बद्रीनाथ धाम के प्रतीक के रूप में है। गर्भगृह के अंदर स्थापित शिवलिंग का आधा भाग काला और आधा भाग गौर वर्ण का है, यह भगवान शिव और माता पार्वती के संयुक्त रूप में विराजमान होने का प्रतीक माना जाता है।

प्रथम एवं द्वितीय प्रदक्षिणा पथ के मध्य बारह द्वार, बारह ज्योतिर्लिंग का तथा द्वितीय एवं तृतीय प्रदक्षिणा पथ के बीच चार द्वारा चार धाम के प्रतीक है। इस तरह बारह ज्योतिर्लिंग परिसर में विद्यमान है। अतः मान्यतानुसार इनकी प्रदक्षिणा से 12 ज्योतिर्लिंग एवं चार धाम की यात्रा का पुण्य फल प्राप्त होता है। सर्पिनी नदी नाम होने के कारण इस स्थल पर कालसर्प योग दोष शांति विधान में शीघ्र फल प्राप्ति की भी मान्यता है। यह विश्व का एक मात्र मंदिर है जहां ज्योतिर्लिंग पर सूर्यकिरणों का प्राकृतिक दिव्य दृश्य कार्तिक पूर्णिमा एवं महाशिवरात्रि अवसर पर दृश्यमान

होता है। मंदिर परिसर में स्थापित अन्य छोटे मंदिर, मूतियां एवं पूजा स्थल इसे पूर्ण धार्मिक परिसर का रूप प्रदान करते हैं।

संरक्षण एवं पर्यटन संभावनाएं

श्रावण मास, महाशिवरात्रि के अवसर पर यहां पर विशाल मेला आयोजित किया जाता है। विशेष अभिषेक, अनुष्ठान, पूजा, विविध भजन–कीर्तन कार्यक्रम आयोजनों में न सिर्फ स्थानीय एवं प्रदेश के श्रृद्धालु बल्कि महाराष्ट्र से आने वाले भक्तों के लिए यह महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। ब्रम्हाण्ड में विद्यमान शक्तियां एक–दूसरे के साथ सम्बद्ध है और उनके मध्य संतुलन ही सृष्टि की निरंतरता का प्रतीक है। इस रूप में अर्द्धनारीश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर का विशेष धार्मिक, आध्यात्मिक महत्व है। मंदिर के आसपास के रमणीय व शांत वातावरण के कारण यहां धार्मिक, सांस्कृतिक पर्यटन के साथ–साथ प्राकृतिक पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। स्थानीय संस्कृति, धार्मिक परम्पराओं, ग्रामीण जीवन, सांस्कृतिक आदान–प्रदान की झलक प्रस्तुत करता यह स्थल छिंदवाड़ा की प्रमुख धरोहरों में से एक है।

अतः इस स्थल के संरक्षण और समुचित विकास की रणनीति बनाकर क्षेत्रीय पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है। मंदिर परिसर की स्वच्छता, सड़क मार्ग, आवागमन हेतु परिवहन साधनों की उपलब्धता, ऐतिहासिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व का प्रचार–प्रसार संबंधी विशेष योजना बनाकर पर्यटन की दृष्टि से इस स्थल को विकसित किया जाना चाहिए। इसमें सरकारी एवं स्थानीय स्तर पर संयुक्त प्रयास के साथ–साथ जन सामान्य की भागीदारी भी नितांत आवश्यक है।

अंततः पुरूष और स्त्री शक्ति संतुलन के प्रतीक के रूप में अर्द्धनारीश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर का छिंदवाड़ा की धरोहरों में विशेष स्थान है। धार्मिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक, आध्यात्मिक पर्यटन की अपार संभावनाएं इस प्राचीन स्थल को और विशिष्ट बनाती हैं। अतः इसके संरक्षण और समुचित विकास की दिशा में प्रयास किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. छिंदवाड़ा भास्कर, 18.02.2023।
2. छिंदवाड़ा पत्रिका, 18.02.2023।
3. पाण्डेय, मंजू : भारत में धार्मिक पर्यटन प्रबंधन।
4. अग्रवाल, विनोद : ऐतिहासिक एवं धार्मिक पर्यटन।
5. ओक्टे, मारूतिराव : छिंदवाड़ा क्षितिज, हिन्दी प्रचारिणी समिति, छिंदवाड़ा।
6. तिवारी, कपिलदेव : छिंदवाड़ा दर्पण, अरूणोदय प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. स्थापना पटल से उद्धरित : मोहगांव, सौंसर।
8. भारद्वाज, चंद्रभानु : संप्रेषण साहित्य, कला एवं संस्कृति का सृजन संवाहक, अंक 183।